Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

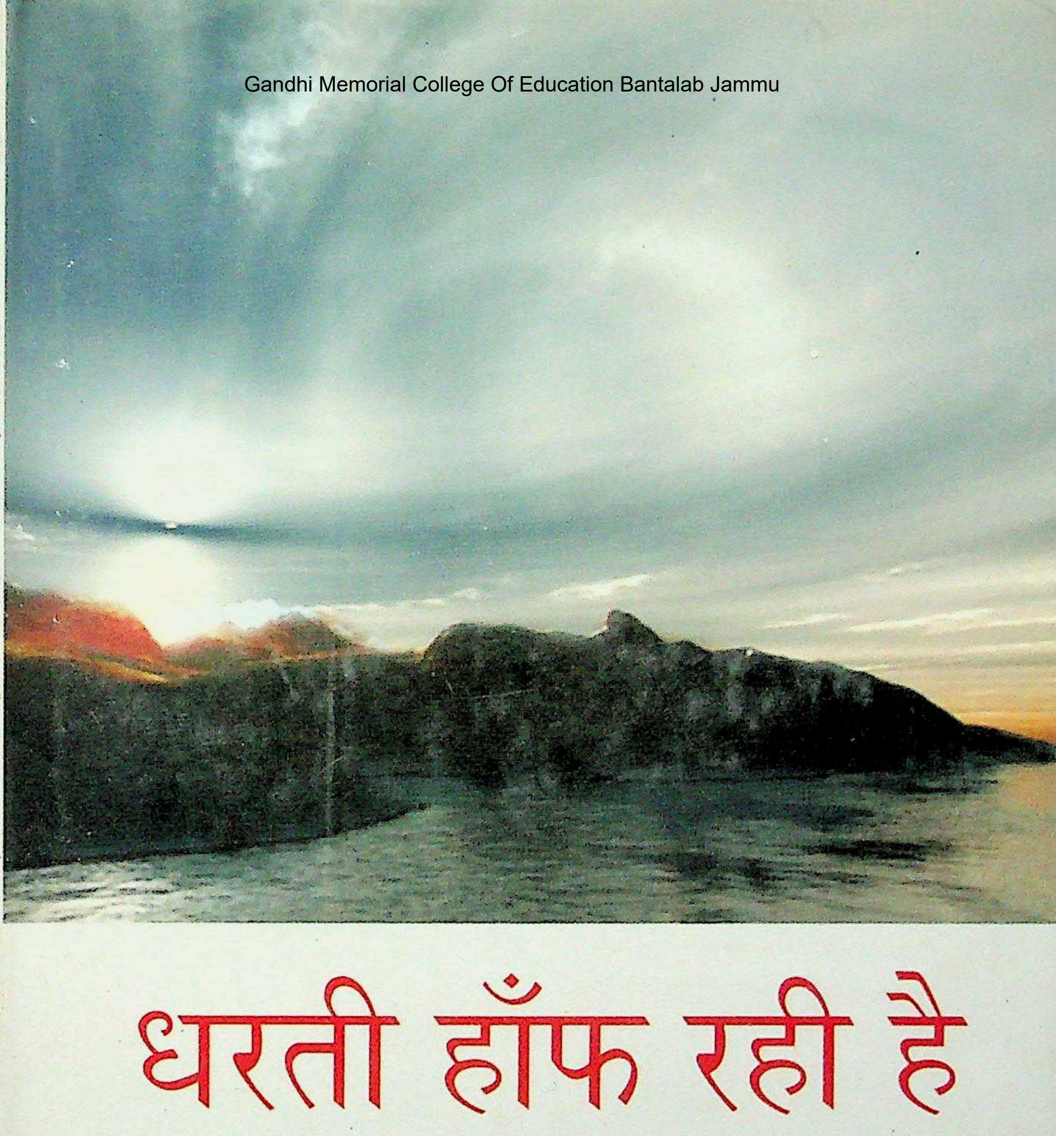

धरती हाँफ रही है

बलदेव वंशी

Preservation Foundation

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

धरती हाँफ रही है

"हाँ, 'प्रकृति और ऋतुएँ' भी आपके कवि को बड़ी सूक्ष्मता से 'प्रेरित करती हैं'—'सरदी' को 'गुरबत पर अय्याशी की सवारी' और 'बादल' के लिए 'आपसी गिले' जो बहुत बार 'सुने-कहे' कहना आपकी मौलिक सूझ हैं और बहुत दिन तक अविस्मरणीय रहेगी—देन यह आपके भावतत्त्व की है। मुझे विश्वास है, आपकी कृति का अधिकाधिक पाठक स्वागत करेंगे।" *—डॉ० हरिवंश राय बच्चन*

"आप कवि-रूप में काफ़ी आगे आए हैं। उपलब्धियाँ तो हर कवि के पास होती हैं, मगर मूल्यवान उपलब्धियों का ही महत्त्व होता है। इस दृष्टि से देखता हूँ, सोचता हूँ, तो मुझे आपकी उपलब्धियाँ काफ़ी मूल्यवान लगती हैं।"
—शमशेर बहादुर सिंह

"बलदेव वंशी की कविताएँ नगरीय अनुभूतियों का तीसरा आयाम व्यक्त करती हैं। उनकी संवेदनाएँ नगर-जीवन के निचले और मध्यम वर्ग का अनिवार्य अंग हैं। उनमें उस परिवेश की क़शमकश और पीड़ा की अभिव्यक्ति है, परिवर्तन की अग्रगामी सामयिकता है, यथार्थ से निरंतर युयुत्सा है और वे मार्मिक स्थितियाँ हैं, जो छोटी-छोटी घटनाओं और अत्यंत साधारण लोगों के कष्ट और संघर्ष को वाणी देती हैं।" *—गिरिजाकुमार माथुर*

"कवि वंशी ने शताब्दी के उत्तर चतुर्थ में अपनी रचनावली की जो छाप छोड़ी है वह इतिहास के ज्योति पत्र में दीप्तिमान रहेगी।" *—डॉ० रमेश कुंतल मेघ*

"बलदेव वंशी के कवि को मैंने जितना कुछ पढ़ा, सुना, समझा और गुना है, अपनी सृजनात्मकता और विचार-शीलता में वे कुछ-कुछ मुक्तिबोध की जाति-बिरादरी के ही रचनाकार हैं, एकदम शुरू से लेकर अपनी रचनाशीलता के इस पड़ाव तक।" *—डॉ० शिवकुमार मिश्र*

ISBN—978-81-89982-01-0

मूल्य : रु० 160.00

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

G.M. College of Education
Raipur, Bantalab
Jammu.
Acc No....4949....
Dated......27.12.2023....

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

धरती हाँफ रही है

(कविताएँ)

आत्मीय
सर्जक द्वय
क्षमा कौल और अग्निशेखर
के लिए सप्रेम ...

बल्देव वंशी
24-10-07

अग्निशेखर और क्षमा कौल
द्वारा यह
पुस्तक सप्रेम भेंट

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आर्य प्रकाशन मंडल

आर्य प्रकाशन मंडल

गांधीनगर, दिल्ली

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

धरती हाँफ रही है

बलदेव वंशी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ISBN—978-81-89982-01-0

© डॉ० बलदेव वंशी

प्रकाशक
आर्य प्रकाशन मंडल
IX/221, सरस्वती भंडार, गांधीनगर
दिल्ली-110031

प्रथम संस्करण
2007

आवरण
निर्दोष त्यागी

मूल्य
एक सौ साठ रुपये

मुद्रक
बी०के० ऑफसेट
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

DHARATI HAANPH RAHI HAI (Poetry in Hindi)
by Dr. Baldev Vanshi
Price : Rs. 160.00

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मानवीय चेतना की
अदम्य कबीरी परंपरा के संतों एवं
निराला के दुःसाहसी उत्तराधिकारी
उभरते युवा कवियों को''

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भूमि

धरती हमारा प्रार्थनाघर है!

...चार वर्ष की आयु का बालक वर्षा के जल में भीगी रेतीली भूमि पर बैठा, वर्षा की फुहारों में भीगता। नंगा बदन। हाथ में नीम के पेड़ से तोड़ी टहनी को चाबुक की भाँति गीली मिट्टी की सतह पर लगातार पटकता। नाचते हुए मोर के खुले पंखों जैसी गोल आकृति बनाने में मग्न। टहनी की पटकार से उठी ध्वनि, बाँह में हलकी जुम्बिश की अनुभूति से मंत्रमुग्ध। इस तल्लीनता में बालक की दादी माँ अचानक वहाँ आकर, बालक की इस हरकत पर क्रोध में भर, बालक के गाल पर एक चाँटा लगाती है। बालक हतप्रभ! आँखों में आँसुओं के साथ उभरे प्रश्न—मुझे क्यों मारा? मैंने क्या कसूर किया है? दादी माँ प्रश्नों के उत्तर में कहती है—इस निर्दोष, मूक धरती को बिना वजह क्यों पीट रहे हो? मैं अवाक्। अबोध आँसू कुछ गीली मिट्टी पर झरे, कुछ गालों पर सूख गए।

...मेरे लिए सारी धरती उसी क्षण सप्राण मानवी रूप में साकार हो उठी। मैं उसमें माँ का चेहरा देखने लगा...

धरती 'पृथ्वी' का पर्याय होते हुए भी अपनी धारण करने, उत्पन्न करने, पालने-पोसने की क्षमताओं के कारण माँ कहलाती है। 'पृथ्वी' ग्रह होने से सौरमंडलीय अर्थ-अस्तित्व से संबद्ध संदर्भों-आयामों में खगोल, अंतरिक्ष की उड़ानों-खोजों से अधिक संबद्ध है। धरती अपनी ऊर्जस्विता के साथ असंख्य संपदाओं, संवेदनाओं, खुशबुओं, हरियालियों, रंगारंग विविधताओं, जैविकता से संबद्ध विपुलताओं से जोड़ती है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आज हमारी समूची धरती घोर संकट में है। एक ओर वैज्ञानिक धरती के भीतर, उसके केंद्र को, नाभि को ढूँढ़ने में, धरती की परतों को बरबस बींधने में जुटे हैं, तो कहीं इसकी प्रकृति, अस्तित्वगत लयों, गतियों से बेजा छेड़छाड़··· ! पहाड़, पेड़, पशु, पक्षी, प्राणी (मानव) आदि के अपने-अपने संकेंद्रक हैं। सतत विकासमान परस्पर संवादरत। यों समग्र एक इकाई है धरती। एक अद्वितीय संवेदित वाद्य। गूँजता एक गीत। प्रवहित एक नाव। एक सामूहिक प्रार्थनाघर गुंजरित···

धरती पर विद्यमान वर्तमान अधिकांश प्रभावशाली मनुष्यों—राजनेता, व्यवसायी, बुद्धिजीवी आदि की निकृष्टता और अधम नीतियों के प्रतिफल अपूर्व संकटों के रूप में सामने आने लगे हैं—बढ़ते भूगोलीय तापमान,ग्रीन हाउस गैसों से पिघलते ग्लेशियर, अपूर्व बाढ़ें, असह्य गर्मी···। एशिया में अत्यधिक वर्षा तो यूरोप में लू के थपेड़ों से घबराया संयुक्त राष्ट्रसंघ भी सभी देशों को चेतावनी देता हुआ आपदा प्रबंधन हेतु आगाह करता है। बढ़ी हुई बाहरी लू और वर्षा को तो ये लोग देख पा रहे हैं, किंतु मनुष्य और मनुष्यता के बढ़े तापमान और अप्रत्याशित बाढ़ों के भीतरी आपदा प्रबंधन कौन करेगा ? मानव-रचित अधम अँधेरों को बाहरी लट्टुओं की रोशनियाँ कैसे मिटा पाएँगी! अन्यथा धरती के नीचे का और रात को आने वाला अंधकार हमारा पुरखा है। देव है। भगवान् विष्णु का शरीर है। पूज्य है। सारी कलाएँ एवं साहित्य, मानव-कृत अंधकार—ग़ैरबराबरी, अन्याय, अत्याचार, शोषण, पर्यावरणीय विनाश, यौद्धिक-रासायनिक आक्रमणों के विरुद्ध समानता, न्याय, संवेदनशीलता, मानवीय संरक्षा, सुरक्षा के लिए सदा संघर्षरत रहते हैं। गई शताब्दी में परिवर्तित परिस्थितियोंवश राजनीतिक अधिनायकत्व को देखते साहित्य में एक साझी मानवीय विश्व-व्यवस्था तथा संयुक्त संवेदनशीलता परिलक्षित हो रही है। राजनीतिक विचारधाराएँ धूमिल होकर निष्प्रभावी हो गई हैं। पश्चिमी दार्शनिक निकायों द्वारा उछाली गई बाज़ारवादी विश्व-व्यवस्था के ज़हरीले-नरभक्षी दाँतों-नीतियों के—'उत्तर-आधुनिक' सांस्कृतिक हमलों को भी आत्मकर्मी—कलाकार कवि जान गए हैं। अपने-अपने देश, प्रदेश, परिवेश में सक्रिय ये लोग उत्तर-आधुनिकता के विखंडन, विध्वंस, विद्रूपन, विस्थापन के विरुद्ध अपनी देशीयता, लोकवादी, मूलगामी चेतना, मनुष्य-जीवन-जगत् की शेष सत्ता की अशेषता को रेखांकित कर रहे हैं। इन प्रवृत्तियों को इधर के अनेक काव्य-संग्रहों में संकलित एवं पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित कविताओं में बख़ूबी पहचाना-रेखांकित किया जा सकता है।

हिंदी कविता ने अपनी पुश्तैनी ज़मीन कभी नहीं छोड़ी। भले ही उसमें

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

युगानुरूप कुछ परिवर्तन या विचलन यदाकदा उभरे हैं। अपनी वैधता में उनके भी सामाजिक-सांस्कृतिक व्यापक हेतु एवं तनाव रहे हैं। समकालीन हिंदी कविता की केंद्रीय धुरी 'विचार' रहा है, तो आज युगीन परिस्थितियों में तात्त्विक परिवर्तन के वशीभूत 'संवेदना' केंद्रीय स्थिति में है। विचार-संवेदन-कल्पना के त्रितात्त्विक अस्तित्व-स्वरूप में आज 'संवेदना' के अनुरूप ढलकर विचार और कल्पना नया अभिगम सरोकार प्रस्तुत कर रहे हैं। क्योंकि यह समय ऐंद्रिकता का है, तो साथ ही तात्त्विकता—तत्त्व चिंतन-मनन—एकत्व एवं एकात्म—का भी है। कविता आज बाहरी परिदृश्य की सँभाल को लेकर चिंतित है तो आंतरिक आयामों को लेकर भी व्यग्र है। यानी समग्रता की और सामुदायिकता की सोच को लेकर सक्रिय है। आज के विभिन्न प्रश्नों के उत्तर देती है, तो स्वयं कई प्रशन खड़े करने का साहस भी रखती है। वह उत्तरकामी भी है, उत्तरापेक्षी भी है और उत्तरदायी भी है। चाहें तो इसे 'उत्तर कविता' कह सकते हैं।

'पत्थर तक जाग रहे हैं' (सन् 2000) की संवेदना के बाद मेरा यह कविता-संग्रह 'धरती हाँफ रही है'। इससे पूर्व हिंदी के प्रखर-प्रख्यात आलोचक डॉ० रमेश कुंतल मेघ द्वारा मेरी कविताओं का चयन 'समुद्र से उठता पहाड़' प्रकाशित हुआ है। 'धरती हाँफ रही है' के संबंध में अलग से अब कुछ लिखने को शेष नहीं। यह मेरा तेरहवाँ कविता-संग्रह है। इन कविताओं पर अपने पाठकों की प्रतिक्रिया पाकर मुझे प्रसन्नता होगी। अग्रिम आभार!

—बलदेव वंशी

ए-3/283, पश्चिम विहार
नई दिल्ली-110063
मोबाइल—9810749703

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अनुक्रम

धरती पुराण

धरती हाँफ रही है	13
धरती हमारी नाव है	15
रक्तसनी धरती बनाम···	16
कूड़ा-कचरा और कोंपलें	18
कच्ची मिट्टी की दीवारें	20
जीवित भविष्य का संविधान	22
औंधा-सीधा : विलोम नहीं	24
अँधेरे का क़द	25
दरिंदे	26
अलक्त्रानिक आँख	27
अधर में आँसू	28
युद्ध प्रदर्शनी : तीन चित्र	29
नाप लो धरती	31
राख में चिंगारी	32
कविता हरियाली और युद्ध	33
सारी धरती ही सजल है	35
अंतहीन अंत : गणित और फलितांश	37
छायानट	39
भूकंप आएँ तो भय मत मानना	41
दरगाह पर चादर	43

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सुकून तो कहीं और है 44
मिट्टी की पुतुरिया ('पाँचों तत्त्व बराती'—कबीर) 46
इतिहासों के बाहर इतिहास 48
हवस 50
अधूरी जाति-कथा 51

महा आकाश कथा

महा आकाश कथा 53
सभ्यता के चोर दरवाज़े 55
बूँद की ओट में सागर 57
खुली आँखों में मौत 58
आदिवासी जंगल में आग 59
पंछी के भी घर जले 61
विशेष ही शेष है 62
दरवाज़े खिड़कियाँ झरोखे··· 64
बेच दो उर्फ़ बढ़ता संवेदी सूचकांक 65
पहाड़ों पर पेड़ों के पंजर 67
दीवारों पर चेहरे 68
गाँव में गिरी दीवार 70
अंधे दर्पण के सामने 72
बरसता है काल 74
जल-आशय में सूर्य-स्पर्श 75
ख़ुद को सुनना ख़ामोश घर में 76
इतिहास और झरती काली धूल 78
अक्षर तक भूल गए हैं लोग 79
पर्यटन 81
आवाज़ें 82
सब कुछ टुकड़ों में 83
हद 84
बे-हद 85

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

काई	86
समयों के द्वीप	87
घर बदलना	88
प्रकाशवती नदी के अँधेरे	89
शब्द, बादल और ख़ामोशी	91
चलता-फिरता क़ब्रिस्तान	93
पोंछे वाली की सोच में घर और चींटे	94

पूरा ग़लत पाठ

अब ? अब ? अब ?	96
केंद्र	98
फिर वही केंद्र	100
बहुरुपिये, हँसते हुए	102
मंडी	104
कपड़े	106
जाले	108
बहस में मौत	111
बस्ती में बाघ	112
जूते	113
लगातार झटकों के बीच (गुजरात भूकंप के संदर्भ में)	115
पूरा ग़लत पाठ	119
सदमा	121
लय	123
विलय	124
अस्तित्व नहीं होते नष्ट	125
हँसी	126
झील	127
प्रेम	127
उच्छ्वास	128

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

धरती पुराण

धरती हाँफ रही है!

एक ही पीड़ा की विभिन्न आकृतियाँ
एक ही वेदना की विभिन्न संस्कृतियाँ
फल-फूल रही हैं धरती पर
और भीतर विभिन्न देशों-प्रदेशों की मनोभूमियाँ
चकित हैं...

किन ग्रहों से आती हैं वक्रमुखी रश्मियाँ
रक्तभीगी कोंपलें। हत्यारी छवियाँ
हमारी धरती पर?
अनचाहे लहलहाती हैं इतिहास के बाहर
इतिहास रचती वेदनाएँ...

पीड़ाओं का इतिहास नहीं मिलता
लिखा हुआ। कहीं। फिर भी
पीड़ाओं की धरती
इतनी उर्वर है कि और-और पीड़ाएँ
उत्पन्न करती रहती है दिन-रात...

पहले से भी बड़ी सघन
पहले से भी कड़ी अधम
पीड़ाएँ कहाँ से आ रहीं?...

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अलिखित इतिहास के रक्त-रंजित पन्ने
पलटकर देखो
पृष्ठ-पृष्ठ रँगा है रक्त से :
पहले से भी अधिक घिनौनी पीड़ाएँ—
'नहीं! हमने नहीं बोईं'
पहले से भी घातक घटनाएँ—
'नहीं! हमने नहीं उगाईं'

किन्हीं अलक्षित ग्रहों से उतर-उतर
स्वयं आ रहीं। भीतर से। पशुता के
अलक्षित क्षितिजों से लक्ष्य में आ रहीं
पहले से अधिक घातक
पहले से भी अधिक पातक मनुष्य
बढ़ते जा रहे
धरती पर···
और धरती बुरी तरह काँप रही है
पीड़ाओं से घिरी
बे-तरह हाँफ रही है!···

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

धरती हमारी नाव है !

धरती हमारी नाव है···
लंबी यात्राओं पर निकले हैं
इसमें—
दो वृक्ष
दो नदियाँ
दो पहाड़
और दो व्यक्ति
परस्पर संवाद में
कई-कई मोड़ पार कर आए···

किंतु
अब इनकी आत्माएँ घिरी हैं
प्रतिवाद में
छिन्न हुए संवाद

जाने कैसी होगी
आगे की यात्रा
कहाँ होगी समाप्त ?···

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रक्तसनी धरती बनाम···

बाग़ में सैर करते
यों ही एक पेड़ के नीचे
मेरे पाँव ठिठके
मैं उसके नीचे रुक़ा।
आँखभर पेड़ को देखा
और मन ही मन
उसके आगे झुका।

फिर बोला—
पेड़ मुझे शक्ति दो
अपने जैसा धैर्य दो
और भक्ति दो!

कहकर हुआ मौन
मेरे सारे प्रश्न गिर गए—
मैं कौन था?
क्या हूँ?
और हूँगा कौन?
इतने में देखा
मैं पेड़ के भीतर के ऋत् में घिरा
निबिड़ मौन हूँ!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अपने दृश्य-अदृश्य असंख्य घावों में सजा
वृक्ष के भीतर का वृक्ष बाहर आया
मुझे उँगली पकड़
हाहाकारभरे जंगल
और रक्तसनी धरती में
लाकर बो गया।

लो! अब मैं भी पेड़ हो गया!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कूड़ा-कचरा और कोंपलें

बहुत-सी चीज़ें थीं वहाँ
मिट्टी के ढेर के नीचे, दबीं
वर्षों से। समय की परतों को
हटाने पर देखा—

महानगरीय कचरे में
महाभूतों के ऐसे-ऐसे सम्मिश्रण
नए सभ्य उत्पाद—रासायनिक
और पॉलिथीन—
धरती पचा नहीं पाई
इस बार। इत्ते वर्षों बाद भी
असमंजस। असमर्थता। अपमान में
अपना धरती होने का धर्म
निभा नहीं पाई···

आँखों के सामने से बुहारकर
हटा दिए जाने पर भी, कूड़ा
कूड़ा ही रहता है। कचरा
कचरा···

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मनुष्य-जीवन के आधुनिक
आयामों के सामने
लज्जित थी धरती

हाँ!
इतना ज़रूर हुआ
कि उस ठिठकी हुई धरती पर उठे
मिट्टी के ढेर पर
अब कुछ कोमल कोंपलें
सगर्व लहरा रही थीं...

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कच्ची मिट्टी की दीवारें

बुलडोज़र से गिराई जातीं कच्ची दीवारें···

दीवारों को मिट्टी
मिट्टी को धूल बनते देख याद आया—
कि कैसे चली जा रही हैं दीवारें। छतें। कच्ची
धूलसनी। अधबनी
शहरों–नगरों की ओर मुँह किए
आधुनिक तकनीक का कमाल है
नगर में जो गया
वो ही मालामाल है···

गिरती–पड़ती दीवारें
दुर्दिनी आँधियों में धूल बन फैल रहीं···

दीवारें ये ऐसी ढीठ हैं
मना करने पर मानती ही नहीं किसी की
न आँखें हैं। न कान हैं
केवल कंधे हैं या पीठ···

बहुत ही बहुत है महानगरों में सब कुछ
मजूरी। काम। और दाम।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रहने को बहुत है जगह सूखे बरसाती नालों में
कारखानों में। फैक्टरियों में। पुलों के नीचे
धूल बन समा जाएँगी दीवारें···

महँगे दामों बिकता है सब—
हाथ। पाँव। बाल। आँखें।
दाँत। आँत। गुर्दे।
ज़िंदा या मुर्दे के भी दाम हैं···

रेलों में
बसों में
ठेलों में
परस्पर बतियाती दीवारें चली जा रहीं
बेतहाशा भागतीं···

कहाँ-कहाँ से उड़कर मिट्टी
कहाँ
कहाँ खप रही है!
मशीनों ने मिट्टी को
सातवें आसमान पर पहुँचा दिया
महानगरों में
पूरी तरह खपा दिया!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जीवित भविष्य का संविधान

धरती की पीड़ा
और आकाश की प्यास,
पहाड़ की अचल समाधि
और समुद्र का दहलता उद्वेलित भाव :
कौंधते हैं एक साथ
अतीत और वर्तमान!—

भूख और बेज़ारी और ईमान!

पुराने महलों, क़िलों के साथ लीपे गए
कच्चे झोंपड़े, छितराए खँडहरों में दबी
ऐतिहासिक प्रतिलिपियाँ ढूँढ़ते पुरातत्त्ववेत्ता :
वेदना की समृद्ध आकृतियाँ...

नए भवनों और स्थापत्यों की नींवों में
अतीत खँडहरों को देखना—
सभ्यता के भविष्य को चीन्हना...

चींटियों की चलती पाँत में
अतीत के देवेंद्रों की पहचान करना

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मृत्यु और स्थापत्यों के सृजन में
विश्वकर्माओं की पीड़ा को आँकना है···

जीवन के साथ
मृत्यु भी
कमानी पड़ती है
और पीड़ाएँ बाँटने वालों की नीयत में
झाँकना है···

इतिहास नहीं है
खँडहरी क़ब्रिस्तान
वह
जीवित। भविष्य का संविधान है! ···

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

औंधा-सीधा : विलोम नहीं

हलका होकर
धरती से ऊपर उठता है जल
आकाश में
सघन हो बरसता है पुनः
जैसे काल
नमीयुक्त खेतों में
लौटता है सुकाल

धरती पर आ कर
स्वयं सीधा खड़ा हो
देखता जिस वृक्ष को
धर्म का रूप है!

वह वृक्ष भी औंधा होता है पहले
आकाश में जड़ें फैलाए
धरती पर शाखें···

धरती पर सब
औंधे वृक्ष
सीधे। और सीधे वृक्ष
औंधे माने जाते हैं···

दोनों जगत। फिर भी
परस्पर विलोम नहीं
पूरक कहलाते हैं! ···

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अँधेरे का क़द

दीपक की जलती हुई लौ!...

इस लौ के नीचे आपाद पसरा
अँधेरा! ...

धरती के निबिड़ अंधकार में
जलती कपास की बाती

खदानों से निकले, निचुड़े तेल की
ज्वलनशीलता और टिन की ढिबरी

इन सबसे
अंधियारे को मापकर देखो

भयावह ख़ामोशी में क्षण-क्षण
कटती रात में कमाया दुर्लभ सवेरा

सदियों पुराना
सामने खड़ा
सयाना और कुटिल
कितना बड़ा हो गया अँधेरा!! ...

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दरिंदे

अलग-अलग
पहाड़ों से
झरने उखाड़
यहाँ रख दिए गए हैं। बिलखते···

उड़ते पहाड़ों के नुचे पंख
बिखरे पड़े हैं यहाँ
चमकीले
प्रदर्शनी मैदानों में :
तड़पते परिंदे···

वहशी हाथ
और चीख़ें शेष
विचर रहे साथ-साथ

साफ़ दीख रहे हैं
धरती पर
घूमते दरिंदे! ···

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अलक्त्रानिक आँख

जो नहीं हुआ
वास्तव में
उसे हुआ दिखा दिया
हू-ब-हू
लोगों के ज़ेहन में। खेल-खेल में
गहरे उतार मन में जमा दिया!
करोड़ों-करोड़ लोग नई सदी में
कटे-मरे उसी विश्वास में...

ऐंद्रिक क्षितिजों के संजाल
घसीट लाते हैं लोगों को
मैदानों-बियाबानों में
इंद्रियों का जादू
पशुओं से अधिक
चलता है मनुष्यों पर। वे घिर आते
मात्र पुचकार में कस्तूरी गंध मतवाली
उन्मत्त बना मारती है भटका-भटका...

अलक्त्रानिक आँख
जानती है अबूझ पगडंडियों के नक्शे
उलझी लकीरें नीले-काले मानचित्र
भीतर
धरती पर उकेरी लकीरों से
साफ़-साफ़ दीखते हैं
आकाशीय हवाई मार्ग !...

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अधर में आँसू

गाता हुआ
आँसू। चमकीला
अचानक छलक गया

खुली आँख में
विषाद
फैला
नदी-नदी
बाढ़-बाढ़

कुलबुलाते
रेंगते कीट। नहीं
घाव। नहीं
टीसें। नहीं
आँसू···

अधर में लटका
शून्य में
सब हो सकता जो
होता हुआ···

इतनी भर दुनिया है!
हँसी में
आँसू छलक
धरती की व्यथा कह गया
जाने क्या-क्या कैसे सह गया! ···

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

युद्ध प्रदर्शनी : तीन चित्र

(क) बारूद से पिटी धरती की
धमकों को
क्षणांश में
बमों से बने कुओं में समा गए
आकारों को
विस्फोटों की धूल में फैली
गंध को
रंगों-रेखाओं में उकेरने के प्रयास
सभी व्यर्थ—
इन जैसे और ऐसे ही
चित्रों की प्रदर्शनी देखने नहीं आए लोग

मटियाले कैनवस पर
धूल धुआँ और धमाका
तीनों का कोलाज़। काले रंग में…

बिना बाँहों वाला बच्चा
अकेला खड़ा
देख रहा है चित्र…

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(ख) बमों से पटी धरती
जले वाहन
सूने वीरान दृश्यों में लावारिस लाशें
चिथड़ा इमारतें···ढही दीवारें-छतें···

आकाश में पक्षी नहीं
दूर-दूर तक नंगे आसमान में
चीलों-से मँडराते हवाई जहाज़
इक्का-दुक्का···

अब आबादी-विहीन दृश्य में
तकनीक को नमस्कार है
तीसरी पीढ़ी के कंप्यूटर करिश्मे को
नंगई का नमस्कार है!

(ग) अस्पताल की दरकी दीवारें
शीशे सब चकनाचूर। भीतर के
दृश्य नंगे। आसमान के
धूल और धुएँ के बादल
जलते तेल के कुओं से निकलते
दैत्य आकार···

इन दृश्यों रंगों आकारों धमाकों को
फैलाकर इक्कीस दिनों में
इतिहास उठकर एक देश से
दूसरे देश की सीमाओं की ओर
बढ़ गया है—
सम-आचार पत्रों में नई तारीख़ वाला
एक और दिन चढ़ गया है! ···

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नाप लो धरती

नाप लो धरती
ज़ितनी चाहो
तुम्हारे हाथ है!

जहाँ तक पहुँचें
तुम्हारी संवेदना लहरें भिगोतीं
रूखे बिलखते रूख
चटख़ते वेदना से वक्ष खेतों के
तड़पते प्यास से रजकण
मुरझतीं कोंपलें नन्ही—
वहाँ तक सारी धरा तुम्हारे साथ है!

नाप लो धरती…

नाप लो आकाश
जितना चाहो
तुम्हारे हाथ है!

जहाँ तक फैली
तुम्हारी चेतना की कौंध
जागृत लोक का आलोक
व्याकुल देशना की आह
वहाँ तक सब आकाश तुम्हारे साथ है!

नाप लो आकाश!
नाप लो धरती!!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

राख में चिंगारी!

पानी
आँखों में ही सूख गया। अब
कविता में   कहाँ से
उतरेगा

सागर
अगर सागर न रहा
ज्वार कहाँ से उठेगा?
फिर भाटा? ···
और बादल?···

आकाशबेधी चीत्कारों की सर्द ऋतु में
फट रही धरती में दुर्वह दरारें···
और कवि
बैठे हैं
गर्म चूल्हों के पास
फ़िलहाल। राख के मध्य
ढूँढ़ते, चिंगारी!···

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कविता हरियाली और युद्ध

धरती कैसे बिछी हुई है धैर्य से
सब कुछ सहती
और उसकी पसलियों में
लगातार एक युद्ध चल रहा है...

कितना रक्त बह चुका होता है
कितनी लाशें हो चुकी होती हैं ढेर
जब एक कोंपल फूटती है
धरती की कोख से
एक कविता लेती है जन्म

युद्ध जीवन का पर्याय है
रक्त स्वतंत्रता का
और हरियाली
धरती के भीतर अंधकार में मचे कोहराम
और घमासान की इबारत

सच मानो!
एक बीज का प्रस्फुटन
असंख्य अणुओं के विस्फोट से
कम नहीं एक शब्द का जन्म

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वृक्ष से टूटे फल को पता नहीं
कि वृक्ष ने ऐसी
कितनी ऋतुएँ झेली और सही हैं—
शब्द और शब्द और शब्द को पता नहीं
कि कवि ने कितनी लड़ाइयाँ जीतीं, हारीं
पचाई और कही हैं...

यह धरती ही
चलती, मचलती और उड़ती है बारूद में
यह धरती ही
गाती, महकती और सजती है खुशबुओं में
हरियाली का युद्ध
रक्तिम युद्ध से कहीं गहरा
और बड़ा है कविता का युद्ध

लोगों ने
रक्तिम युद्ध
कभी-कभी ही
स्वार्थों-अधिकारों के लिए
लड़ा है!
पर हरियाली और कविता का युद्ध
लगातार, अटूट, निर्मम
और कड़ा है!

उस युद्ध में लोग
सिर लेने के लिए जाते हैं
इस युद्ध में
सिर देने के लिए जाते हैं!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सारी धरती ही सजल है!

वृक्ष से एक टहनी तोड़ो
हरे-भरे वृक्ष से एक टहनी तोड़ो
पत्तों और फूलों से लदी एक टहनी! ...

उसे अपनी हथेलियों पे लिटाकर
सँभालकर चलो।
खुद भी सँभलकर चलो
चलो और देखो—
धरती में जहाँ कहीं जल होगा
वहीं यह झोल मारेगी
धरती की ओर झुकेगी

लो देखो
दो ही कदम चलने पर
किस बेतरह झूल गई है टहनी
झूल गई हैं पत्तियाँ
फूल
अरे गंध तक झूल गई है
तुम्हारे हाथों में

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लगता है
तुम्हारे पैरों के नीचे की धरती में
ज़रूर कहीं जल है!

यों अपने को समूचा
इस धरती से जोड़कर देखो
यह सारी धरती ही सजल है! ...

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अंतहीन अंत : गणित और फलितांश

दलित। इच्छाओं का दौर-दौरा है/ चमड़ी के नीचे
नसों के चटख़ने तक के
तनाव
अकड़े-खिंचे स्नायु। देह के
देहांत से पहले…

और और और भी
सब कुछ…

धरती पर इच्छाओं का घेरा बड़ा
बड़ा होते-होते
जंगल के जंगल। वृक्षों-झाड़ों के समूह
पक्षियों के घोंसलों सहित
साँसों की सफ़री राहतें तक ढुक रहीं
कट-कटकर महानगरी भवनों में
उठ रहीं। मंज़िलों पर मंज़िलें
ढुकता जाता। जीवित ही। सब कुछ—
धड़कनें। धमनियाँ। ध्वनियाँ
धमकते वक्ष। स्पंदित स्वर
आ रहे काम! …

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक युद्ध छिड़ा हुआ है भीतर। हाहाकार में
अविराम!

आकार लेता। उठता है एक नगर
महानगर की सीमाएँ लाँघते हैं लोग। भवन
इच्छाएँ सड़तीं-घुलतीं आशंकाओं में
आकांक्षाएँ धँसी जा रहीं रँभातीं
भयाकुल तबेलों में…

और एक
अंतहीन अंत का गणित
फल रहा। स-फल-ताओं में
घिर रहे हैं आधुनिक
महानगर! …

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

छायानट

छायाभास
स्वप्निल
कैसा··
रोशनी रचती है छल
अँधेरी दीवारों पर
धरती पर। भीतर
परछाइयों को काटती-उलझती
परछाइयाँ··

रोशन वास्तव,
विश्वासों में
घात-प्रतिघात :
कैसे ओछे उल्लास :
बच्चों के हाथों में रंगीन गुब्बारे जैसे
भरी गैस में फूले। उमचते। आकाश में
छलतीं हवाएँ। भ्रमित विश्वासों में

ठेठ धरती पर पड़ा
या खड़ा व्यथाओं में क़ैद
व्यक्ति रोता है गुब्बारे के लिए

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आकाश के लिए। हवा के लिए
और कुछ लोग गुब्बारे को झुला रहे हैं
ऊपर
ही
ऊपर

और नीचे
गुब्बारों की परछाइयाँ पकड़ते
लड़ते। अपने हिस्से की धरती पर
पड़ती परछाईं पर
झपटते···

समझ नहीं पाते।
इस रोशनी का खेल
परछाईं का छल
उड़ते रंगीन गुब्बारों का सच

ये गुब्बारी वास्तव
और यथार्थ कैसे
कैसे भरमा रहे। रच रहे संसार
कि वास्तविक लड़ाइयों को भूल
लड़ रहे
गुब्बारों की परछाइयों के लिए···

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भूकंप आएँ तो भय मत मानना

पहाड़ सदियों लंबी नींदों सोए-जगे
पेड़-पशु वर्षों की चेतना समेटे
अगली-अगली सीढ़ी चढ़े
पक्षी गुरुत्वाकर्षण के विरुद्ध सतत संघर्षरत
मनुष्य प्राणी इन सभी की विकसित चेतना लाँघे
कंगूरे पर···ध्वजा बन···

इन सभी के
अपने-अपने संकेंद्रक
सभी परस्पर संवाद में रत
संवेदी आलाप में···

पर
इधर घिर गईं प्रतिवाद में
उलझ गईं सबकी आत्माएँ
अखुट विवाद में—
पसलियाँ छीजने पर पहाड़
कटने-छिलने की बे-वजह पीड़ा में पेड़
वध-शालाओं में छटपटाते
बँधे-कटे पशु

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

व्याध के जाल में छले गए पक्षी
बारूदी सुरंगों के विस्फोट में चिथड़ों उड़ी चीख़ें
भयाकुल मानवी—
सब एक साथ
एक तार में बँधे झनझना रहे
दृश्य-अदृश्य
टूटे संवादों में सब भरभरा रहे···

अब पृथ्वी के संकेंद्रक को छूने-बेधने की
मनुष्य की पूरी तैयारी है
उत्तर ढूँढ़ती चलेंगी
संवेदी आरियाँ गहरी
छेदतीं
धरा का धैर्य···
संकेंद्रक को पाना है। हर हाल!

ऐसे में
यदि भूकंप आएँ
तो भय मत मानना! ···

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दरगाह पर चादर

यह
फूलों की बनी
या कसीदे-कढ़ी
रेशमी चादर नहीं!

मानव मात्र की पीड़ाओं में
अपने दर्दमंद श्वासों के
ताने-बाने बुनी
आँसुओं भीगी-रँगी चादर
चढ़ाई गई संतों की दरगाह पर—

यहाँ कबीर-दादू-रैदास-मलूक जैसे
संत सोए हैं
इस धरती में!

सोए कहाँ
जागे हुए सब
एक साथ
पत्थर के आँसू रोए हैं! ...

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सुकून तो कहीं और है!

दर्द
और दर्द की परछाईं तक
पराई है
यहाँ! ...

विकलता में। तड़पते हुए समय में।
अपना तो कुछ भी नहीं...

समुद्र तक की बेकली
छटपटाती है दिन-रात—
सुकून तो कहीं और है! ...

बादल
खारेपन में नहीं जानते बरसना
कहाँ। किस जंगल बस्ती में
पहाड़। उजाड़ में। बरस जाते हैं
रीतने का सुख उन्हें
उड़ाए लिए आता है
भरे होने की पीड़ा ही
परेशान किए है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भरा–पूरा। यों पीड़ित है
उसे होना है अधूरा।
और अधूरा
पूरा हुआ चाहता है।

धरती पर और तल में बिछलता है
मुखर होता द्वंद्व
हर पल गरजता
बरसता मन के संकुल बियाबानों में
खिलता। सृजन के आयामों में

रिक्ति का सपना
आकाश है। श्वास–प्रश्वास का
अपना। कहाँ होता है ?

दर्द की
इस चमक चौंध में, अभी–अभी
क्या आपने कुछ देखा है ? ...

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मिट्टी की पुतुरिया

('पाँचों तत्त्व बराती'—कबीर)

पाँच फुट साढ़े सात इंच आकार में बँधा
सात समुंदरों का धड़कता
अहरह उद्वेलित 'जल'
स्पंदनों में सतत हिलतीं। भीतर गिरीं
रोशनियों की महराबें

उनचासों पवनों के सीनों में हूकतीं
इच्छाएँ
दिशावाही इरादों के साथ
जाँचतीं गुरुत्वाकर्षणों की वलगाएँ

सातों आसमानों के रंग-बिरंगे शून्यों में
फैले तने सतरंगे इंद्रधनुषों से छूटे तीर :
घायल बिद्ध रूहों की हूकें
अनहद के सुर बज रहे भीतर...

दिन-रात हत। आहत होते धरती से जुड़े जीवन
क्लेशों की अनवरत खुलती ध्वनियाँ, सुर
नित नए-नए संयोजन
दुःखों के नित नए समीकरण!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बिवाइयों फटे पाँव
हवाइयाँ उड़े चेहरे चीख़ें रोदन···

ऐसी संपदा!
इतना सहती है मुई
मिट्टी की पुतुरिया!

पाँच फुट साढ़े सात इंच आकार में
कौन खड़ा है तट पर
द्रष्टा बना?
आठ पाँवों पर
यह किसकी बरात है?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इतिहासों के बाहर इतिहास

सिर्फ़
कवि ही
संवेदना तरंगों को
धरती पर उतारने के माध्यम हैं
सूक्ष्म संवेदी यंत्र!

भोक्ता भी वही होते हैं प्रथम
दहलती भूमियों के वारिस···

रक्तसनी युद्धभूमियों को सँभाले भीतर
इतिहास-अश्रुओं की इबारतें
रचते-पचाते अभिशप्त
पहरुए···
स्वयं ही करते गोड़ाई
सींचते बंजर
फिर तैयार भूमियों की संवेदनीयता को
जीवित रखने वाले
किसानी संकल्प

झेलते हैं सबसे पहले
ख़ूनी इरादों, युद्धक अंदेशों के ज़लज़ले

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भय में काँपती कोंपलों के साथ
गंधों उमंगों में बार-बार
होते हैं पैदा फिर-फिर
मरने के लिए
जीने के लिए···

अनेक सिलसिले आते हैं चलकर
इतिहास-भीतर—
वाल्मीकि कालिदास तुलसी कबीर निराला
घायल और लहूलुहान
अलक्षित ग्रहों-नक्षत्रों के
दुर्दमनीय हत्या-क्रमों का लेखा-जोखा दर्ज करने
पीड़ाओं को गाने
युग और मानव और चिथड़ा आकाश के अहसासों में
बार-बार कहकहे गुँजाने
गूँजने···

वे ही अविकल
कल हैं संवेदी
ध्वनित धसकती धमनियों में सजग
रचते इतिहास
इतिहास बाहर वेदनाओं के
अदृश्य लोकों के दृश्य संकेतों को पकड़ते
गाते हैं
और यों
मानवी इतिहासों में
इतिहास बन जाते हैं! ···

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हवस

भय की फ़सलें
लहलहा रहीं। हर कहीं···

रक्तसनी धरती
पहले से
अधिक वीरान हो गई

आकाश में
चीलों के हुजूम
डैने फैलाए
एक के बाद
एक
क्रमबद्ध बममार

यकसार बरसती मौत
तुम्हारी विकराल बढ़ती
हवस
निहत्थे लोगों की देहों में
भय की
सनसनाती फ़सलें बो गई! ···

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अधूरी जाति-कथा

धरती पर लहरा रहीं
भरपूर
पीड़ा की फ़सलें
और मसीहा
अपने भीतर क्रास पर लटके
ऊँघे जा रहे···

पीड़ा की प्रवाहित हैं अजस्र नदियाँ
औलिया उन्हें
बालिश्तों में मापते
हाँफे जा रहे···

कामनाओं के टीले
भुरभुरा गिर रहे भीतर
अँधेरी खोहों में लगातार
खोहों के नाग फूतकारने
आबादियों में आ रहे···

कैसी नियति, हुई अंधी
कामनाओं के हाथों

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सद संकल्प सभी
धूल में छितरा रहे

रास्ते टटोलते लोग
घबराए, अँधेरे में
परस्पर टकरा रहे! …

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

महा आकाश कथा

महा आकाश कथा!

नहीं!
वे महज़ कुछ शब्द नहीं थे…
उड़ते गाते रंगीन परिंदे :
खुलते
फैलते
उजले आकाश!
अपना-अपना इतिहास मुँदा-ढँका
साथ लिए
समाते गए भीतर
महा आकाश में…

एहसास न था
तब तक वैसा
कि कितना बड़ा होता है ब्रह्मांड
कितने होते हैं आकाश—
नक्षत्र—
लोक—
अपने-अपने उनके प्रकाश
वर्ष
मास-दिन और क्षण…

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कब कैसे खो गई
उनकी आत्म-गंध?

पता जब चला
तब तक पूरा ब्रह्मांड
खंड-खंड। टूटा-बिखरा
धुआँख-धूलभरा रक्तिम
छोटे-छोटे आकाशों का
महाकाश था पूरा
देश
और मैं
बदहवास! ...

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सभ्यता के चोर दरवाज़े

यह भी होता है
कि मिट्टी खून के आँसुओं
रोने लगे
आकाश
दु:ख में
खुद को भिगोने लगे···

सीढ़ियाँ
उतरने
लगें
सभ्यताएँ···
तहख़ानों में बंदी लोग
इतना पगला जाएँ
कि उन्हें छूते ही
हवा के भी कंपन छूट जाएँ···

युगों की काल-संधियों में
क्रूरताओं के आदिम रूप
नए बीभत्स आकारों में सामने आएँ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

छिजी नहीं हिंसा
कमतर नहीं हुईं
आदिम काल से पीछे लगीं
चिति में और और घिनौनी होती गईं
विकसित हुई हैं नई-नई प्रणालियाँ
मारन विधियाँ

कि जब भी मरें लोग
अधिक से अधिक मरें
जल्दी से जल्दी मरें
जीवित ही हँसते-हँसते
या मलबों में धँसते
धँसते···

दसियों वर्षों में बनीं इमारतें
सदियों में उठीं सभ्यताएँ
बहुमंज़िली
भरभराकर क्षणभर में
बैठ जाएँ
विशेष कोण और दृष्टियाँ
विकसित कर अपने साथ लाती हैं चोर दरवाज़े
सभ्यताएँ
अब ऊपर आती हैं! ···

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बूँद की ओट में सागर

मैंने तो बस इतना ही किया
कि अनंत अर्थ-विस्तार को
एक शब्द की ओट में
धर दिया

मैंने तो बस इतना ही किया
सागर के अतलांत जल को
एक बूँद की ओट में
कर दिया

मैंने तो बस इतना ही किया
कि ब्रह्मांड की उनचासों पवनों को
एक ही साँस की ओट में
उच्छ्वास भर जीया

मैंने तो बस इतना ही किया
कि अनहद नाद को—
केवल एक नाम के उच्चारण में
जी भर लिया

मैंने तो बस इतना ही किया! ...

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

खुली आँखों में मौत

यह क्या
कि मिट्टी लावे-सी खौलने लगे, अचानक
लोहा इनसान की बोली बोलने लगे
और इनसान अपने भय और बेहोशी में दफ़न
दंग···

यह क्या
कि अचानक विस्फोट। धमाके। लपटें। चीख़ें
जंगल का जानवर वहशी नाच उठे बस्ती में
हर कहीं, पनाह माँगते असहाय चीत्कार···

यह क्या
कि ज़िंदा खड़े-खड़े खुली आँखों
ताबूत-से जलें लोग
या जलते हुए सड़कों पर भागें भयाकुल
और लोगों की नंगी आँखें
उन्हें देखतीं निचाट!
इधर
कई-कई आवृत्तियाँ हैं···

आग को लेकर आदमी
इस तरह कभी नहीं चला
आकाश चाटतीं
बेहया फैलतीं लपटों में
खुली आँखों
कभी नहीं जला! ···

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आदिवासी जंगल में आग

हरे-भरे पेड़ों के जंगल में
आग
चटख़-चटख़ जल रहे खड़े-खड़े पेड़
लपलपाती लपटें
उन्हें चाट रहीं···

और
गठरीभर
ताज़ी कटी लकड़ियाँ
एक साथ सुलग रहीं भीतर बँधी
झुग्गी में
पलकें उठीं, तो
आदिवासी
आँखों में धुआँ ही धुआँ! ···

(कुछ दिन पहले
कुछ कारें आई थीं, लंबी
बड़े-बड़े लोगों को लाई थीं···)

दूर-दूर तक
अब कहीं नहीं दिखे पक्षी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पहले ही छोड़ चुके
घोंसलों को
पर अंडे?
बच्चे? और लगातार जलता जंगल?
बढ़ती लपटें? ...

यह आग
बाहर से आई
या भीतर से उठी
भौचक हैं
आदिवासी! ...

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पंछी के भी घर जले

पंछी
दुःख को ही
सुख मानकर
जीए जाते हैं। धरती पर

भय को भी
वृक्ष-वृक्ष दोहराते हैं
अभ्यासवश
गुनगुनाते हैं

नहीं जानते
सुखी निर्भय जीवन की नियामतें

जानते होते
तो
ऐसे नहीं होते! ...

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विशेष ही शेष है!

शेष
बहुत कम है
लपटों घिरे विशेष जीवन में
अब! ...

धधकते अंगारों में
स्मृति में रखकर चलना इसे
जहाँ तक वृक्ष हैं
हरियाली और भागती-दौड़ती
गिलहरियाँ हैं पेड़ों पर

अजानी दिशा से आईं
अजनबी दिशा को
जाने को
पंख तोलतीं चिड़ियाँ
झूलतीं टहनियों पर—

इन्हें स्मृति में रखकर
देखना फिर से दृश्य को...
बच्चे की हैरत में से

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रथम बार देखने की तरह
या कि अंतिम बार देखने जैसा
देखो परिदृश्य को

अंतिम श्वास की देहरी पर
खड़े होकर देखो
बस! अब शेष बहुत कम है
तो, विशेष ही शेष है!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दरवाज़े खिड़कियाँ झरोखे··· !

पहले
डराता नहीं था अँधेरा
कैसा भी··

साथी था
उजाले जैसा ही। अपना
भीतर-बाहर एक-सा गाता चमकता चहकता

सभी खिड़कियाँ झरोखे दरवाज़े खुले निःशंक
कैसे भी दिन हों
या माघ-पौष की कोहरीली रातें··

अब
दिन होते ही हर सुबह
दरवाज़ा खोलने से पूर्व
कौंधकर
भय आ बैठता है माथे पर पहले
ठिठक जाते हैं हाथ और श्वास और विश्वास

ज़हन में उभरा एकबारगी—
सँभलकर खोलो
दरवाज़ा
जब भी खोलो! ···

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बेच दो उर्फ़ बढ़ता संवेदी सूचकांक

बेच दो
जो भी बिक सके। लगे हाथ···

सब जो बिक रहा है, तो
क्या रखना शेष कल के लिए।
कौन जाने
तब तक बाज़ार बदल जाए

रेल जहाज़ धरती आकाश नदी पहाड़
आलू हल्दी नीम—
यानी चल-अचल जो भी हाथ लगे···
दुधमुँहे शिशु भी!
पाट दो विश्व बाज़ार
पैदा कर लेंगे और
देर मत करो···
बाज़ार अनुकूल है अभी। भाव चढ़े हैं
मंदी नहीं। कहीं···

देहों से बनी सामूहिक
एक गंध होती है घर की एकात्म

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कि जैसे फ़िकरमंद मालकिन
कई रोज़ के झगड़े-टंटे के बाद
फ़ालतू कपड़ों-लदी झूलती रस्सी-सी ठहरी
सोई थी रात को
तो हाथ उसका अपने वक्ष पर ही रह गया
बच्चे के साथ। दम घुटने पर
चिल्ला उठी सपने में—
'हाँ! हाँ! बेच दो!'

हड़बड़ाकर देखा तो
घर से मरद
और वक्ष पर से बच्चा ग़ायब था

ख़ाली हाथ था वक्ष पर
और वह थी अकेली
ख़ाली घर में···!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पहाड़ों पर पेड़ों के पंजर

पेड़ कट तो गए
बड़े-बड़े
विवादों में घिर गए···

किसने काटा? किसकी अनुमति?
कटने के बाद खुले में
पड़े रह गए···

काल के हाथों
दुष्काल की साँसों में घिरे
भुरभुरा रहे। छूते ही
हाथों में आ रहे
खोखली खाल, हड्डियाँ···
बे-मौत मरे पेड़ों के पंजरों में
पंछी अब भी बना रहे घोंसले

अभी-अभी खुली हैं आँखें
पंख निकलने पर
इन पेड़ों और पहाड़ों को भी
छोड़ जाएँगे

तब ये पंजर अपने सूने जीवन को
अगले मौसम तक
कैसे बहकाएँगे?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दीवारों पर चेहरे

पुरानी दीवारों पर। घर की
कुछ चेहरे उभर आए
झड़े–उखड़े पलस्तर के गिरने से
समय के/हस्ताक्षर नहीं
पदचापें हैं···

कैसे
कैसे डरावने
उभर आए
समय के सरक जाने से
जैसे सर्प की छोड़ी हुई खाल

डरावने इन चेहरों के साथ
एक ही घर में। रहना
जैसे अकाल या दुष्काल में
चहुँ ओर नाचते प्रेतों से घिरे

इस बीच
साथ के ज़िंदा चेहरे
कहीं बिला गए

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गहरे, अंध-विवरों में,
गर्तों में समा गए

पर
दीवारों पर उभरे चेहरे
जी रहे
चल रहे साथ-साथ
चहुँ ओर से घेरे
डरावने
ये दीवारों के चेहरे…

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गाँव में गिरी दीवार

पक्के इरादों बनाई दीवार
कल गिर गई अचानक!

किसी के हाथ
किसी के पाँव
किसी का धड़ और किसी की टाँगें
दब गईं
अजीब चीख़ो-पुकार मच गई बस्ती में—

कैसे गिर गई ऐसी पुख़्ता दीवार? ···

हाय! हम तो खोमचा लगाते थे
उसके सहारे
हाय! हम तो छाया में बैठते थे
दोपहरी को
हाय! मेरी तो गाय का खूँटा था
उसी के सहारे गड़ा
हाय! हमारा नंबरदार तो
वहीं बैठकर चबाता था पान।
यह दीवार अपनी
कैसे गिर गई बिना बताए

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जाने किन मुओं ने दे दिया धक्का
नहीं तो हम अपनी चारपाई उठा लेते
गाय खोल लेते। नंबरदार का क्या
कहीं भी बैठ चबा लेगा सुरती या पान/थूक देगा/न मिली जगह
तो थूक निगल लेगा। ...

पर/पर लोगों की तो
टाँगें तक चली गईं, हाथ तक कट गए
टूट गए बाज़ू। दिमाग़ों तक को मार गया लकवा

हाय! अब इन दिमाग़ों का
क्या होगा? ...

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अंधे दर्पण के सामने

उतर चुके पानी में
चेहरा
बदसूरत हो आया है···

भले ही बाहर वाले उसे सुंदर मानें
अपना ही मन नहीं मानता
भीतर-भीतर जानता है
कि दर्पण एक सत्य है! ···

बार-बार आते-जाते
भीतर-बाहर। घर के
यों ही देख लेना दर्पण
स्वभाव हो गया हो भले ही
नए वस्त्र या बाल या चेहरा
सँवारने की ग़र्ज़ से
देख लेना दर्पण

पर न देखो, तो भी
काम तो चलता है
और दुनिया भी···

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पर दर्पण ?
पानी उचट जाए
तो दर्पण
दर्पण नहीं रहता
बताता नहीं सत्य। पूरा
व्यक्ति का! चेहरे का! दुनिया का!

भीतर का सत्य
भीतर का पानी ही दिखाता है।
और यदि पानी उतर जाए
या मर जाए
तो सही चेहरा कहाँ नज़र आता है ? ...

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बरसता है काल

कच्चे रंगों से बनी आकृतियों पर
गिर गया है ढेर-सा पानी
गई रात

अचानक
फैल गई हैं
रूप की रेखाएँ/भयावह

ऐसे ही
पैदा हुए राक्षस!

अच्छे
भले लोग
असमय बरसे-गिरे जल से
विकृति में डूब गए
गड्डमड्ड हुए आकार…

ऐसे ही
विकृत होती हैं
कृतियाँ
संस्कृतियाँ…

इस देश
प्रदेश में
घुमड़कर
बरसा है जल!
बरपा है काल!!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जल-आशय में सूर्य-स्पर्श

देखो
देखते ही देखते
तुम्हारी ऊर्जस्वित किरणें
बींधकर मुझे। मेरे जलीय अस्तित्व को
पार हो गईं काल-अंतराल में…

दूसरे-दूसरे लोकों की ओर
बढ़ गईं
(कैसे कहूँ कि नीचे उतरीं
आकाश से
या ऊपर चढ़ गईं?)

कौन-सी दिशा स्थिर है?
कौन-सी दशा शाश्वत?
(जबकि समूचे ब्रह्मांड में हलचल है
गर्दिश है लगातार)
कुछ भी सापेक्ष नहीं…

है तो, स्मृति शेष, बँधी-बिंधी
मात्र मिट्टी के आकारों में
और प्रति लहर-लहर
आलोकित स्मृतियाँ…

फिर न जाने, अब
कब होगा संसर्ग
और मुखर होगा जल
आशय…

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ख़ुद को सुनना ख़ामोश घर में

(क) अकेला ख़ामोश है
घर।
इस घर में। वह भी है
ख़ामोश।

पर
चीज़ें सब बोल रही हैं
ख़ूब
ऊँची आवाज़ में

आदमी
चुप होता है जब
तो चीज़ें बोलती हैं

(ख) बोलती चीज़ों से घिरा
आदमी ख़ामोश है
उसने एक-एक कर
चीज़ों को बाहर कर दिया
ख़ामोशी से

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अब भीतर ख़ामोशी है गहरी
और बाहर शोर
पर
दीवारें बोलने लगी हैं बे-इंतहा···

(ग) आदमी ने ख़ुद को
दीवारों से भी बाहर कर लिया
खुले आसमान के नीचे
अब दूर-दूर तक
न चीज़ें थीं, न दीवारें

ख़ामोश था
आदमी उदास बेहद
चीज़ों के लिए।
जो बाहर पड़ी थीं···
उन चीज़ों से ही तो स्मृतियाँ लिपटी थीं
दीवारों की। मोहन्जोदड़ो से आज तक की
इन्हें वह फिर सुनना चाहता था साँसों के साथ
ख़ामोश। घर में···

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इतिहास और झरती काली धूल

काली धूल है—
निराशा।
जमी बैठी
इतिहास के पृष्ठों में

इसे एक जगह से उड़ाओ
उड़कर दूसरी जगह
बैठ जाती है :
जंगली चिड़िया मांसखोरी

ख़ामोश
आकाश को घेरती
देश और काल में फैलती
समाती

समय-बे-समय
आँखों में
उतरती रहती

देखते-देखते
धूल-धूसरित हो जाते हैं सब
रंग चेहरे पहचाने…

बस
एक स्याह दुनिया
रह जाती है शेष! …

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अक्षर तक भूल गए हैं लोग!

शब्द के साथ
लिपटी होती है भावना की धुंध भी
धुआँ भी
और उसके अंतर में सिमटी होती है
युगों तहाई आग। अकूत
छीलकर इसे
अलग नहीं कर सकता कोई

प्रकट होती है यह आग, जब
जल उठती हैं दिशाएँ
ताबूत-से जलते चलते हैं लोग
झुलसकर
जल पड़ते हैं आसमान
तब, बुझाने को
ओछे पड़ते हैं समुंदर···

पानी के सैलाब में
बेबस बहती चींटी तक
फाड़ लेती है मुँह प्रतिशोध में

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चिड़ियाँ तक
टूट पड़ती हैं बिलाव पर
क्रोध में। और बिलाव
भूखे कुत्तों पर···

पर
आदमी में जम गई हैं, आज
सब प्रवृत्तियाँ। ख़ूनी सभ्यता के
प्रतिकार की।
आत्मरक्षा की वर्णमाला के
अक्षर तक
भूल गए हैं लोग! ···

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पर्यटन

इन सर्दियों में
अदृश्य किन्हीं संचारी तंत्रों में बँधे
ढेरों की तादाद में निरीह
खिंचे चले आए प्रवासी पक्षी
चिल्का झील में

संचार-माध्यमों ने ढंग से समाचार
और बहेलियों ने जाल
फैला दिए हैं

अब उड़ीसा के होटलों में
बढ़ गई है
चटखोरे सैलानियों की भीड़!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आवाज़ें

खोई हुई
उतरती हैं आवाज़ें
अर्श से पुनः
या उठती हैं पार्श्व में कहीं
और साकार हो जाती हैं
भीतर
सामने/पर्दों पर...

पुराण या इतिहास की हदों को लाँघ
तहाए पृष्ठों के बीच से सरककर
कभी जंगली पशुओं की, युद्धों की
नायकों, खलनायकों की...

स्मृतियों में कौंधतीं
वर्तमान की कई आवाज़ों से मिलतीं-जुलतीं
विस्मृति की कंदराओं से
औचक
निकल-निकल आतीं
वर्तमान के
घमासान में
तब वर्तमान बदल जाता है
भविष्य को
और अतीत
वर्तमान को!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सब कुछ टुकड़ों में

पूरा
नहीं हुआ ढेर/ढाँचा

अभी
खड़े हैं खँडहर
मलबा भी।

खंड-खंड बँटा
व्यक्ति
विचार
शरीर
निकल रहा बाहर
मलबे से—

इतिहास
भूगोल के ढहे भवन से
धूल-धूसरित। कटा
फटा

अरे
छत ही बैठ गई
अर्रा कर
इस बार!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हद

सरहद के पास जैसे
ख़त्म होती है हद, देश की
रुक जाते हैं पाँव/उसके आगे
मुँदी-ढँकी होती है मौत ख़ामोशी में
पसरी होती है हद···

हद के पहले भी
हद होती है वैसे। नहीं देखी गई
इतनी साफ़-साफ़ गए वर्षों
जैसी आज। सुलग उठती है अचानक
हतप्रभ हैं लोग
अरे! हद हो गई! ···

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बे-हद

सरक जाओ
नीचे धरती के
तल में। खाइयों में
बाहर। इस बार
जानलेवा घाम नहीं पड़ रही
घूम रहे
अपने ही इलाक़े के लबार बिचौलिए
और ऊँचे दामों बिकाऊ हैं—
हड्डियाँ। बाल। खाल
सब कुछ। खुल्ले हाट-बाज़ार···

इधर बाज़ार में जंगल
और जंगल में बाज़ार पसर गया है
जैसे देस में परदेस
और परदेस में देस समा गया है

पहले
हद के बाद भी कहीं
होती थी एक हद
अब समाप्त हैं सब। हदें
अपना लोकतंत्र
बेहद फैल गया है! ···

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

काई

पेड़ की परछाईं
छोड़कर पेड़ को
कहीं चली नहीं जाती
घटती-बढ़ती रहती है
उसके आसपास

दुर्दिन में पत्ते चाहे
छोड़ जाएँ
हरियाली
पानी भी…

कितने भी साँसत में हों प्राण
व्यक्ति छोड़ता नहीं, जीना
ज़लालत के फेंके दाने भी
चुन लेता है
झुलसी पलकों से

ज़लालत
यहाँ काई की तरह
देती है दिखाई
पूरा ढक गया है
पानी !…

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

समयों के द्वीप

अतीत समयों के अनेक द्वीप हैं
भीतर
जहाँ आत्माएँ भटकती रहती हैं हमारी

वहाँ के मौसमों को आत्माओं में भरकर
अपने समयों में लौट आते हैं
बार-बार

हमारे चित्त क़ाबू में नहीं रहते
क्षण-क्षण उलट-पलट जाते हैं

एक साथ रहते हुए भी
हम अलग-अलग भटकती
द्वीपीय आत्माएँ हैं। निकट इतना फिर भी
अजनबी। परस्पर···

द्वीप ये घिरे हैं अँधेरे समुद्रों से
इनके जल में हम।

हमें अजनबी बनाते हैं
ये समयों के द्वीप!···

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

घर बदलना

बदलना घर का
यारब, फिर से सारा सामान
इधर से उधर...

क्या कुछ ले जाएँ, ज़रूरी
कि ख़ास-ख़ास कुछ छूट न जाए।
पर, क्या सब कुछ लिया जा सकता है, कहाँ
साथ?
किन-किन वस्तुओं का
व्यक्तियों का
आसपास भी कहाँ?

दीवार के इधर का सब
उधर कैसे ले जाएँ?
कि उजाड़ भी न लगे,
सब जाने पर
उधर बस भी जाए

पर,
छूटे हुए/छूट रहे श्वास, स्पर्श
गंध, दृश्यों में घुले हुए अदृश्य हम
छूट रहे यहीं कहीं बैठे, लेटे, चलते
रह न जाएँगे? घर
बदलने पर भी, पूरा
उधर कहाँ जा पाएँगे? ...

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रकाशवती नदी के अँधेरे

पूरे वेग में दौड़ रहा रथ...

पर इतने सारे लोगों के भीतर
कहीं कोई उद्वेग नहीं! ...

लगभग शून्य हो गए
लोग—
निरपेक्ष। स्थिर। गतिहीन
जैसे घूमते चक्र की धुरी से जुड़ी
निष्क्रिय अरें!

दृश्य बदल रहे
तेज़ी में। बिना बताए। समझे
—बदलो! कुचले जाओगे!
जल्दी बदलो!

बाहर सब छूटा जा रहा
पीछे—
वर्तमान हैं केवल लंबी छायाएँ
लकड़ी। मिट्टी। लोहा। पत्थर
यही तुम्हारा जहान है!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सत्ता के पीछे
सिर्फ़ शून्य ही शून्य का प्रसार
केंद्र में
और रथ
दौड़ रहा पूरे वेग में···

स्वप्न। कल्पना। संवेदना—
सड़ा काठ हैं
निरा ईंधन···

क्रिया–अक्रिया में
गति–अगति में
कर्ता–अकर्ता में
कैसे बदल गए?

प्रकाशवती नदी के सुनहले तट
और स्पंदित दृश्य कैसे
कैसे अँधेरे निगल गए? ···

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शब्द, बादल और ख़ामोशी

रचता हूँ जितना
ख़ामोशी
और बढ़ जाती है

कहाँ से आते हैं
उतरकर
शब्द
ख़ामोशी को कहने
कब
कब
आते हैं बँधने
अपने आप
ख़ामोशी ही उनका बँधन है।

ख़ामोशी बढ़ेगी
तो शब्द आएँगे
सामूहिक अवसाद के घाम
जब घिरते हैं
उठने वाली उमस तब
रचती है शून्य
            बेसाख़्ता

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भाग पड़ते हैं घहराकर
चिंतित हवाओं के साथ
जलीय घने बादल

मूसलाधार वर्षा की संभावनाएँ :
ख़ामोशी में तनी होती हैं उनकी वल्गाएँ
मुँहजोर अश्वों की शक्ति
मानवशक्ति बन चमकती है
काले सघन घुमड़ते बादलों के कलेजों में
दहलते सागरों से खींचा विह्वल जल
बंधनों को तोड़
बरसता है ताबड़तोड़

टूटती है क्या
ख़ामोशी ?
वह और और और
सघन होती जाती है ! ···

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चलता-फिरता क़ब्रिस्तान

वह नाहक पिटा घर में
तो उसने कुछ बोलना चाहा
डाँट पड़ी माँ से—चुप रहो
सामने बाप है! …
वह चुप हो गया!

दूसरों की ग़लती पर
स्कूल में
मास्टर से पिटा
उसने प्रतिवाद करना चाहा
डाँट पड़ी साथी से—चुप रहो
सामने मास्टर है ! …
वह चुप हो गया!

धर्म के नाम पर ठगा गया वह
उसने/अपना क्रोध प्रकट करना चाहा
डाँट पड़ी पुरोहित से—चुप रहो
सामने भगवान है!
वह चुप हो गया!

अब कहने को वह हट्टा-कट्टा
नौजवान है
पर, वास्तव में
चलता-फिरता क़ब्रिस्तान है!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पोंछे वाली की सोच में घर और चींटे

ज़रा-सी धमक से
झर पड़ता है दीवारों से भुरभुरा कर रेत
उचट जाती हैं मरी सफ़ेदी की पपड़ियाँ···

बाहर से
देखने पर
सब ठीक-ठाक हैं बाबू लोग और घर
दीवारों पर पौधों के गमले
गमलों में खाद-पानी

सुबह की चाय के साथ
टहलते हुए फूलों को देख लेना
पत्तियों को छू लेना नंगी उँगलियों
काँटों की सँभाल में
बीन लेना सूखे तिनके···

किंतु भीतर इनके—
कई वर्षों से नहीं करा पाए सफ़ेदी
पलस्तर या मुरम्मत
किल्लत भी नहीं इतनी पैसे की

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

समय की धड़कन पर
उँगलियाँ हैं पाँचों और दोनों कान
पर भीतर की दीवारें नंगी।
सुनसान! ···

किंतु पोंछे वाली ने
पिछले महीने ही झूठ बोल
की थी छुट्टी : 'बेटी बीमार है'
और लीपा अपना घर-आँगन-दीवारें
भरे थे चींटों के छिद्र

पोंछा हाथ में लिए बैठी
दुखती एड़ियों में फटी बिवाइयाँ देखती
सोचती है, क्षणभर रुकी—
कल फिर करूँगी छुट्टी
चींटे फिर निकलने लगे हैं
छिद्रों से···

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पूरा ग़लत पाठ

अब ? अब ? अब ?

'प्रार्थना करो। प्रार्थना
बुरे दिन कटेंगे!'
—और हम जुट गए प्रार्थना में।

'बँधो। मुक्त होने के लिए
बँधना पड़ता है!'
—हमने बँधना स्वीकार कर लिया।

'पहले धरती से बँधो
यहीं से आते हैं प्राण!'
—हम धरती से बँधे। उसके आकर्षण से
नीचे गए। देखा :
अथाह अंधकार
असंख्य बीज कुलबुलाते
जीव-जन्तु तड़फड़ा रहे प्रकाश के लिए
आकाश के लिए…

'भीगो। जल में भीगो। फूटने के लिए
बीज को भीगना होता है।'
—हम भीगे। जल में। अंकुरित होते
बीजों के साथ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'धैर्य धरो। घबराओ नहीं
जीवन धैर्य से मिलता है!'
—हम गहन अँधेरों में धैर्य धर गलते रहे
घबराहटों को छुपाते या परस्पर बाँटते।
एक ताप भीतर से फूटता गुनगुना, अचानक
अरे यह क्या? खोल चटखे। अंकुर फूटे
बाहर आए हम। खोल से। अपने से।
आकाश में। प्रकाश में। अब? ···

यहाँ देखा—
तो उधर से भी अधिक गहरा अंधकार
अंधता। अंधेर
जो शक्तिशाली है। धूर्त है
उसी के हाथों में बटेर। अब??

तीसरी बार कहा उन्होंने—
'प्रार्थना करो (बटेर)! प्रार्थना
धैर्य धरो। मुक्त हो जाओगे
जल्दी मत करो!'

हम पुनः प्रार्थना में जुट गए
और देखा—
—मुक्तिदाता
ऊँचे आकाश में समवेत
खिलखिला रहे हैं। पूरी धरती को
घेरकर
गुँजा रहे हैं। गो कि
बुरी तरह खँगाल और हिला रहे हैं···
हम समवेत सोच रहे हैं—अब?
अब??
अब??? ···

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

केंद्र

केंद्र में कौन ? ...
इसी बात के लिए लड़ रहे सभी
सड़ रहे घाव
सदियों से जन्म के साथ शुरू हो जाती है लड़ाई
भीतर-बाहर। गाँव बसते ही
शहर बनते ही क़स्बों में
औज़ारों। हथियारों के साथ
हो जाते हैं चौकस क़साई
क़साबख़ाना बन जाती हैं आबादियाँ...

प्रश्न वही :
केंद्र में कौन ?

कौन है केंद्र में ? सब के सब चाहते होना
बराबर। बराबर बाँट लेना चाहते हैं सब कुछ—
धरती। आसमान।
और होना चाहते हैं केंद्र में लड़ते-झगड़ते
व्यवस्था के लिए। नई-नई व्यवस्थाएँ
बनाते बातों-बातों में हाथापाई घूँसे लात...

चिंताएँ ढालती हैं केंद्र
छोटे-बड़े। जहाँ भी मनुष्य है

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दिखना चाहता है नचाता सब कुछ को
अपने इर्द-गिर्द
और लड़ते हुए हो जाता है बाहर
धुरींहीन। कोई भी। कभी भी
केंद्र कैसे हो सकता है?

हो सकता है अवश्य जब कभी साथ शस्त्र हों
शास्त्र हों स्वार्थ-गढ़े सत्ता हो
तब शेष सभी हो जाते हैं बाहर लड़ते-लड़ते
आप आपे से क्रमशः मरते—
उतरती हैं जैसे नदियाँ
नदियों के पानी
पानियों की रवानी

आज वे सभी बाहर हैं। सोच में। डूबे
हाथों में क़लमें। कुदालें।
हाशिए पर। आ गए वे सब चिंता की
चीज़ हैं। चिंतन की भले ही
पर केंद्र? ...

केंद्र में व्यवस्था है और सब व्यवस्थित—
गोलीबारी। सीमा पर सेना
नगरों में पुलिस। सुरक्षा और बल
क़स्बों-देहातों में नियंत्रित है स्थिति
जहाँ-जहाँ केंद्र हैं। वहाँ-वहाँ बंदूकें हैं टँगी
कारतूसों की भरी पेटियाँ
खूँटियों पर

केंद्रों में आज
खूँटियाँ हैं व्यवस्थित
ये खूँटियाँ ही केंद्र हैं! ...

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

फिर वही केंद्र

सब कहीं तने हुए सूत्र हैं। बाँधे सबको
भौंहें हैं। कलमें हैं। संगीनें हैं। यहाँ!
यहाँ देखो—
इधर, लोक, बाहर है हाशिए पर
धज की तरह। बंदनवार जैसे
शोभायात्रा के लिए बँधे। मुख्य मार्गों पर
खड़े सजे-सँवरे लोग
हाथों में वर्षा के लिए फूल-पंखुड़ियाँ
आँखों में ज़रूरत की चीज़ों के ऊपर जिज्ञासा।
जिज्ञासा! आती हुई सवारी की। सवारी पर बैठे तंत्र की…

ज़रूरी चीज़ें और बातें नीचे हैं दबी
जिज्ञासाओं के इंतज़ार में। स्वागत में
मुख्य मार्गों पर खड़े हैं लोग इंतज़ार में।
मसलन ख़ाली या भरी हुई झुग्गियों में
फ़्लैटों में। चलती या खड़ी बसों में। रेलों में।
अस्पतालों या जेलों में एक इंतज़ार होती है सबको
सबके साथ एक इंतज़ार चलती रहती है
जागे या सोए! हँसे कि रोए कि आँसुओं में
बच्चों के साथ मासूम रंगीन खिलौनों की
खेल की इंतज़ार। छुट्टी के बाद या कभी भी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चिंताओं के साथ बड़ी होती है खेल की इंतज़ार
और मौक़ा मिलते ही मनमाफ़िक डूब जाता है
हर कोई अपने-अपने खेल में!

फिर, देखो
यहाँ, केंद्र में एक खेल है
इंतज़ार इंतज़ार का खेल!...

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बहुरुपिये, हँसते हुए!

उन्हें कुछ नहीं करना। महज़ चाहना है।
उनके चाहने में ही
सब कुछ छिपा है
अपने आप हो जाना है। वैसा
जैसा और जो वे चाहते हैं···

अभी
खलखल हँस रहे
दूरदर्शन के बुलाए हुए इकट्ठा दिखे
देखो!
देखो कैसी क्रूर हँसियों में धँस रहे··

'आज भी सबसे ईमानदार केवल वे ही हैं!'
एक ने कहा, तो सब हँसे। हँसते रहे—
संसद के गलियारों में घूमती उनकी हँसी
झर रही। हर कहीं
दूर-दूर तक क्षितिजों में
कौंध भर रही··

काँच के पर्दों में यह कैसा चलन है :
किसी प्रश्न का उत्तर नहीं आता—

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

केवल हँसी आती है। जवाब में
या बहुत हुआ तो पुलिस
या सेना निकलती है बैरकों से और
फैल जाती है गलियों में, गाँवों में
उनकी परेड दिखती है।
आँखों के सामने पर्दे ही पर्दे हैं—
लाल। हरे। काले। पीले। सफ़ेद...
वहाँ नहीं पहुँचती आँच
ठंडी कर दी जाती है या छितराकर
बिखेर दी जाती है—जेलों में। अस्पतालों में
श्मशानों में...
शेष बचे-खुचे दुबक जाते हैं सुरक्षित
तबेलों में। खालों में। अँधेरे मकानों में
बाहर होते हैं भारी जूते। जूतों की परेड।
मटरगश्ती। खिलखिलाहट। मौजमस्ती...

और-और महँगी हो जाती हैं ज़रूरी चीज़ें
लोगों की पहुँच में दुर्लभ हो जाता है गुस्सा
गुस्से में चलता हुआ आदमी
दिखता है हँसता हुआ! ...

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मंडी

खाल को नाम दे रहे थोक में
विशेषण जड़ रहे नए व्यापारी अगुवाई में
काया में क़साई स्थित हैं भीतर-बाहर
रहनुमाई में

देश-प्रदेश के तार घनघनाते हैं
चमड़ी के नीचे हाहाकार में। अस्थि-पंजर
मांस-मज्जा-रक्त का कारोबार

तेज़ी पर है अंतर्राष्ट्रीय व्यापार…

जैसे भी हो। चले धंधा। जो भी हो
आकाश में चमके सब। बिके जल्दी।
कैसा भी गोश्त। ज़ायका बदल रहा
धर्म-ईमान। देह में भले ही दिल में
धरती में। सबसे अधिक पानी है
कहीं भी, लाचार है जो भौचक है
चकाचौंध में मरता…

नया बाज़ार भरता है खालों से बने सामान से
काली जिल्द के नीचे सब लाल है। समुद्रों का पानी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

धुलता अफ्रीका। रँगी खालों का चलन बदलता
कैसे भी। हलाल या झटका। दोपाए-चौपाए की माँग-
पूर्ति के सिद्धांत चल रहे। वायु या जलमार्गों पर वैध-
अवैध पारगमन। यान। यात्री। डूब रहे दुर्घटनाओं में
चलते हों या रुके खड़े…

समाचारों में चुस्त इन्हें खोज रहे। गोताखोर। दिखा रहे
छोटे पर्दे पर। बढ़ रही माँग : सुरसा-से मुख-सी
विकराल। दरार। फैलती जा रही दुनिया। काली
गंदुमी। प्रदेशों की पैदावार अंडों-चूज़ों की उपज
मुर्गियों की। बाहर—सफ़ेद मंडियों में
आ-जा रहे दलाल-आदेश—
बाँगलादेश बरास्ता भारत-कोलकाता
मुंबई-दिल्ली बरास्ता काठमांडू, मणिपुर, दुबई…

पानी और मिट्टी की मार
बुरी होती है भूख। धसकती है धरती। गर्त में
देखते-देखते समा जाती है पेट में समुद्र के। पानी
पानी को काटता है। गहरे
जीवों को, खाइयों को पाटती है मिट्टी
आख़िर
मिट्टी से…।

तो भी
बड़ी मंदी है
मंडी में। आजकल…

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कपड़े

वे लोग बाज़ार गए
नए नए ढेरों क़ीमती कपड़े ख़रीद लाए
निश्िंचत हो गए उन्हें पहन
कि ख़ूब ढँक गए…

दूसरों के लिए पहनते हैं लोग कपड़े
देह है तो देहांत तक कपड़े भी चाहिए
या ठंड की चिंताएँ
पहनाती हैं कपड़े
देहों पर

बाहरी नग्नता ढँकने की ख़ातिर
पहनते हैं कपड़े
कि स्वयं को भी लगें ढँके हुए
ज़रूरी हैं कपड़ों के नीचे भी कपड़े

इसके आगे
उन्हें ज़रूरत नहीं होती
देह, देहांत से आगे
वे दीखते हैं मायूस या नंगे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ढँके होने के बावजूद
झाँक जाती है छुपी-ढँकी आत्मा,
दिख जाते हैं बेहद ढँके लोग, बेचारे
क्या करें, कहाँ से लाएँ वे कपड़े
जो ढँक सकें उनकी नंगई। आत्म
देहात्म की!

ढँकी देहों में बेतरह
नंगे होते लोग। बढ़ रहे
लोगों के समूह···।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जाले

कहाँ से/कैसे बन जाते हैं। इतनी जल्दी
अभी पिछले इतवार को ही तो
तोड़े थे जाले···

आप सिर्फ़ उन्हें ही तोड़ सकते हो
जो साफ़ दीखते हैं दीवारों पर
या छतों या संधियों में लटके-झूलते
छुट्टी के दिन लगातार किसी दबाव की ज़द में
होते हैं जब घर
सबसे अधिक अखरते हैं जाले
जैसे तुम्हारे अस्तित्व के आसपास बुने हों
ताँत-ताँत तने हों
चारों ओर···

यों आरंभिक तंतुओं को
ग़ौर से न भी देखो
पर उनके तने होने के
एहसास हो चुके होते हैं
ग़फ़लत में ही सही, अनदेखा करते जाना—
तुम्हारी आदत बढ़ती गई है

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पुश्तैनी। क़र्ज़ की तरह। जुड़ती गई है
एक-एक ताँत। चंद्रकलाओं की तरह
और एक दिन देखते हो
कि पूरा चंदोवा बन गया
फ़ानूसनुमा एक और षड्यंत्र पूरी तरह तन गया
--बाज़ार। घर। दफ़्तर में…

कहीं भी हो। एकत्र दबावों में अचानक
भड़क उठते हो ज़रूर, अनेक कामों के बीच
अखर जाते हैं असमय दीखे ये जाले

जीने के कई-कई सिलसिले
घिरते जाते हैं सिलसिलेवार
और तुम हाँफते हुए टूट पड़ते हो
जालों पर
हँफनी और गुस्से के पूर्व भी
जाले तो थे—
आलस्य और लापरवाही के भीतर…
ख़ामोश मकड़ियों की पीढ़ी दर पीढ़ी बढ़ती संख्या
और संतानें और प्रजातियाँ…

अपने को हर बार समझाते हुए—
'कहाँ-कहाँ, कब तक तोड़ते रहें
स्वयं अपने हाथों'—
जीने के और भी ज़रूरी दबावों में रहते
हार-थककर
छोड़ बैठते हो तोड़ना…

उससे आगे
अन्यथा 'ख़ुद ही न टूट जाएँ' की

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सीमा पर बैठ जाते हो चाय के प्याले के साथ
निढाल हो बीड़ी या सिगरेट के साथ
और अगली बार और घने
बने फैले जालों में
उलझते जाते

बस यहीं से शुरू होते हैं जाले
तोड़ने और टूटने की हद पर
बार-बार बुझती बीड़ी या सिगरेट के साथ
या उत्साह की तरह
हर बार
ठंडी होती चाय के साथ..।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बहस में मौत

झुग्गी के दरवाज़े पर
पुलिसिया ताला जड़ा है
विवाद में—

यह मौत भूख से हुई है!
नहीं, बीमारी से हुई है!
नहीं हुई!
हुई! नहीं! हुई!

लोकतंत्री
विधानसभाओं में
पक्ष-विपक्ष में
लंबी बहस चल रही है···

और उधर—
ऊजड़। अँधेरी। झुग्गीनुमा कोठरी के भीतर
अकेली
एक लाश पड़ी सड़ रही है!···

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बस्ती में बाघ

फिर-फिर ऐतिहासिक भूलें और चालें
फिर-फिर खँडहरों में नुचे पंख लोथड़े और चीखें
फिर-फिर जंगली दहाड़ें और भयावना रोदन
फिर-फिर बहेलिए भेड़िए और सियार
फिर-फिर बिचौलिए बंदूकें और सरकार···

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जूते

बेटे के पाँव में
आ गए हैं, बाप के जूते
वे दोनों अब
हमजोली हो गए

जूते के साथ
बेटे ने क्या कुछ नहीं पहन लिया

दुःख दुविधा दरिद्रता
हारी बीमारी—
पुश्तैनी संपत्तियों की हक़दार होती हैं
संतानें
लेनदारियों से कहीं अधिक
देनदारियों की
भारी क़र्ज़दार…

फटे-पुराने जूतों में
छुपे-सने
रोगाणु कीट कीचड़ कोढ़
कुछ भी…

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गाँव से चलते
माँ ने तभी कहा था—
जूते ही ले जाते हैं
राह-कुराह
ठाँव-कुठाँव
किसी के भी फटे
या साबुत में जाने-अनजाने, वहाँ
पाँव मत डालना

जब भी पहनना
चाहे अपने ही
हर बार
झाड़कर
पहनना! ···

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लगातार झटकों के बीच

(गुजरात भूकंप के संदर्भ में)

---

1. जहाँ मैं दब गया

मिट्टी और मलबे के नीचे
जहाँ-जहाँ मैं दब गया हूँ
देख रहा हूँ वहीं से
स्वयं को
लाश-सा उठाए जाते हुए...

अरे कम से कम ढंग से तो उठाओ
यह अभी-अभी मरा है हँसते-हँसते
मिट्टी में दबकर
जीता हुआ परिवार के साथ
और यह इसी के अपने घर का
मलबा है!
ज़रा ढंग से उठाओ...

2. छिटकती हुई पीड़ाएँ

कितनी
कैसी हसरतों से उसारा गया
दीवारों में

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उधार की ईंटें-साँसें
वस्तुएँ…

सरकारी
ग़ैर-सरकारी क़र्ज़ों के भार
अभी भी शेष हैं इसके सिर पर…
ज़रा ढंग से उठाओ…

3. भावी फ़सलों के बीज

सुरक्षित भविष्य की
बीमे की रसीदें अभी भी सुरक्षित हैं
मलबे के नीचे। बचे हुए लावारिस दुधमुँहे की
रक्षा का प्रश्न
अभी नहीं तो कल को ज़रूर उठेगा
घेरेगा अपंग या साबुत
चलता हुआ दिखेगा सड़कों पर
तब तक इतिहास होकर
सुरक्षित हो चुका होगा मलबा भी
भूकंपी झटके लोरियों-से आएँगे।
याद/खाद बन चुकी होगी
भावी फ़सलों-भूकंपों के लिए…

4. मृत्यु-बोध

मरी हुई माँ की छाती से सटा बच्चा
बच गया। ज़िंदा निकल आया बाहर
मलबे के नीचे से
खरोंच तक नहीं कहीं
जिस्म या मन पर

अबोध था। बच गया। चाटता रहा रक्त/माँ का
सात दिन। सात रात…

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बहुतों को मारती है दहशत
मौत की। बेचारे समझदार
बहुत जल्दी
बदल जाते हैं मलबे में···

5. मलबे में इतिहास

अब बच गए हैं तो
क्या कर लिया हमने
काल का। मृत्यु का। भूचाल का··

सँवारा या बिगाड़ा भी कुछ नहीं
वही करता है काल, जो
करता है। हमें तो होना है। बाद में भी
भूकंप के। जो हो ही रहे हैं
जो करना है पहले। वो बाद में
कर रहे हैं।

मलबा उठाते हटाते हुए
इतिहास में ढूँढ़ रहे हैं
ऐतिहासिक भूकंपों की तीव्रता
मृतकों की संख्या

और भावी मलबों की दहशत में
चल रहे हैं···

6. सवेरा/मिट्टी का

धूलसना अँधेरा है यह
मिट्टी के मलबे के नीचे
साँसों में
भर रही धूल
आँखों में अँधेरा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अपने हाथों रचा पहाड़ जैसा बोझ
समुद्र जैसा गहरा
युगों नासमझी-भरा
अंधा अँधेरा
कहाँ है
इसका सवेरा? ...

7. **सब कुछ टुकड़ों में**
पूरा नहीं हुआ
ढेर। ढाँचा
अभी खड़ा है खँडहर
खंड-खंड बँटा। टुकड़ों में—
व्यक्ति
विचार
शरीर
निकल रहा बाहर
इतिहास के ढहे मकान से
धूल-धूसरित
व्यवस्था...

अरे
छत ही बैठ गई
इस बार...

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पूरा ग़लत पाठ

कई पाठ हैं
इस एक किताब में···

शब्द घावों-से ख़ुले हैं। असाध्य
बढ़ते जाते हैं उपचार में
पीड़ा और टीसें···

चलते-फिरते
शब्दों में क़ैद
कई-कई ध्वनियाँ। ज़ंजीरों में—
दृश्य। बँटा हुआ। छिदा आकाश
सिर पटकती हवाएँ
सूने पेड़ों को देख चिंता में घिरे
भयभीत
उड़ते परिंदे
दाँतों वाले डरावने सपने :
दिन में। खुल रहे रेगिस्तान
टूटकर गिर रहे पहाड़। बेहाल
तितलियाँ और नदियाँ
फैल गई हैं आकाश को ढाँपतीं···

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पढ़ते हुए
किताब में
कैसे-कैसे
उभर आए हैं पाठ :
काले। धुमैले। डरावने!

उत्तरों की जगह प्रश्न
और प्रश्नों की जगह गूँगे उत्तर
कटे-फटे
विस्थापित हो गए हैं
धरती पर
पूरा पाठ ही ग़लत है! ...

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सदमा

अपने से
अपने को बाहर करना...

इतने दिन हो गए
नहीं निकला वह बाहर
न आँसू बनकर
न हिचकी
न बुक्का फाड़ रोदन

यकायक सन्नाटा खा गया
भीतर कुछ जम गया पहले
तीन दिन। तीन रात। जमा रहा
भीतर...

फिर कट-कट कर। क़तरा-क़तरा
किरच-किरच गिरता रहा भीतर ही भीतर

धीरे-धीरे दर्द। ताप बन फैला
पूरी देह में।
आँखों की पुतलियाँ भीगीं

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एकत्र होता रहा जल। बूँद-बूँद
फिर बाँध तोड़ बह निकला—

लो!
गला सदमा। पिघला भीतर
बाहर बाढ़ आ गई। ···

डूब गया सब एक ही बार
आँखों-आँखों। देखते-देखते
खेत-खलिहान-झोंपड़े
एक साथ सारा। घर-बार···

कैसा होता है सदमा?
सदमे का ज्वार?? ···

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लय

यह घड़ी
शीत निद्रा में जाने की नहीं

ज़रा उठाकर देखो तहों को

मिट्टी की पर्तों के नीचे के ताप में
तपे हुए हो पहले जन्मों से

जाग रही है प्रकृति लय
अभी
कहीं
विलय की घड़ी नहीं! ...

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विलय

घूमती हुई भूमि पर
बैठा
अपने चाक को घुमाता
कुम्हार
ख़ुद भी घूम रहा है
मिट्टी के साथ

पाँवों तले कुचली गई गीली मिट्टी
कुम्हार के घूमते हुए चक्के से उतरकर
रँगी हुई मूर्तियाँ बन
बोलने लगी हैं कई-कई आकारों में

एक लय/जग आई भीतर
बाहर भी
सँवर गई

विलय तक आसपास
एक दुनिया
पसर गई

पूजा के बाद कृतज्ञता में डूबे
लोग इन्हें स्वयं प्रवाहित कर आएँगे…

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अस्तित्व नहीं होते नष्ट

जातीय अस्मिता के पहाड़ भी
अकेले पड़ गए···

देखो, अपनी–अपनी आत्माओं में
झाँको : सूनी हो गईं नदियाँ
नंगी हो गईं झीलें
समुद्र बे–ज़ार, अभिशप्त
झरने लाचार
अँधेरे में जा रहे लोग जीवित वृक्ष···

बच रहे चमड़ी । लकड़ी । पानी । पत्थर
अंधे अँधेरों में सब
छले जा रहे···

स्वयं ही जलाना होता है सब कुछ को
आत्मिक तापों में
तभी जातियों को
मार्ग मिलते हैं। युगों–युगों के
निचाट अँधेरे
चैतन्य आँचों में पिघलते हैं

जलने पर, यों
अस्तित्व नहीं होते नष्ट
परिवर्तित होते रूप
जैसे धूमैले बादलों के रीतने पर
निकलती है दूधिया धूप···

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हँसी

अभी-अभी ठठाकर
हँसे हैं शिव!
उनके ठहाके
शिखर-शिखर
कूदते

उतर गए गूँजते
गहरी घाटियों में···

और सफ़ेद हँसी
जम गई है पर्वतों पर।
वर्ष भर पिघल-पिघल
अठखेलियाँ करती
नदियों में आएगी
प्यासी धरती के लिए
असीम तृप्ति लाएगी···!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

झील

इस वर्ष
हँसती-खेलती आँख की पुतली
अचानक पथरा गई है।
लगता है समूची झील
स्पंदित
दुर्दिन की ठंड
अधिक खा गई है!

प्रेम

प्रकृति की
स्नेहिल कोमल इच्छाएँ हैं
लताएँ
लपेटती-लिपटती-फैलती जातीं लगातार
वृक्षों पर
टहनियों का बलिष्ठ सहारा पाकर
फल रहा
साँसों का संसार!…

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उच्छ्वास

दल के दल
घहराते
भूरे बादल
--धरती के उच्छ्वास हैं

अपनी ही अँसुवाई आर्द्रता में
धरती घिरती है पुनः-पुनः विश्वास में

बादल ये
नई किसी हरीतिमा में ही छिपे
अगली ऋतु के
मादक उल्लास हैं! ···

□□

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

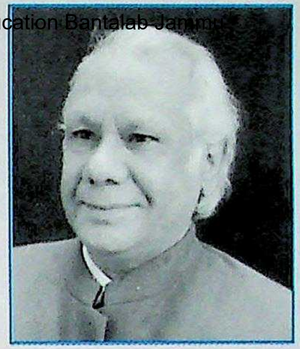

डॉ० बलदेव वंशी

जन्म : 1 जून, 1938, मुलतान (पश्चिमी पंजाब, अब पाकिस्तान)। एम०ए० हिंदी, पी-एच०डी०। हिंदी के विख्यात कवि, आलोचक, नाटककार, पत्रकार, संपादक। चौदह कविता-संग्रह, बारह आलोचना-समीक्षा पुस्तकों सहित संतों पर दो ग्रंथावलियाँ–संत मलूक ग्रंथावली, संत दादू ग्रंथावली का संपादन। संतों पर दर्जन-भर पुस्तकों का लेखन-संपादन। पचास से अधिक पुस्तकें प्रकाशित। साहित्य भूषण पुरस्कार (उत्तर प्रदेश, 2003), शिरोमणि साहित्यकार सम्मान (पंजाब सरकार, 2004), साहित्यकार सम्मान (दिल्ली सरकार, 2004), केंद्र सरकार द्वारा सम्मान सहित कबीर शिखर सम्मान, संत मूलक रत्न पुरस्कार आदि अनेक सम्मान प्राप्त। विश्व रामायण सम्मेलन, बेल्जियम (1989) एवं मॉरीशस, इंग्लैंड, हॉलैंड, नेपाल आदि तथा देश में कबीर चेतना यात्रा आदि सहित साहित्यिक-सांस्कृतिक यात्राएँ। भाषा संरक्षण संगठन के संस्थापक अध्यक्ष, 'विश्व कबीरपंथी महासभा' के अध्यक्ष, 'अखिल भारतीय श्री दादू सेवक समाज' के महानिदेशक। 'विचार कविता' (पंजी०, त्रैमासिक) के संपादक।

संप्रति

श्री अरविंद महाविद्यालय (सांध्य), मालवीय नगर, नयी दिल्ली (दिल्ली विश्वविद्यालय) के कार्यसंपन्न रीडर।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

आर्य प्रकाशन मंडल